**मेरी रचनाएँ**

**1॰ हिन्दी गीत**

 **राजभाषा हिन्दी का मान बढ़ाए चला ,**

 **सब का मिलाए चला ।।**

 **जब–जब छाए देश पे विपदा ,**

 **प्रकटे तब श्रद्धा से त्रिजटा,**

 **शंभू - शंकर के मधुर गीत गाए चला ।। सबका ।।**

 **देश हमारा बने अखंड ,**

 **खंड का न हो पाखंड ,**

 **कल्याणमयी(ममतामयी) भाषा का झुंड बनाए चला ।। सबका ।।**

 **चम-चम चमके हिन्दी , हिन्दी दिवस का प्रभात ,**

 **दरिया बन उफने दृग मेँ ,राज भाषा का प्रवाह ,**

 **जग में हिन्दी का परचम लहराए चला ।। सबका ।।**

 **हम जुबान परदेशी पाए ,**

 **अपनी भाषा से शरमाए ,**

 **आंग्ल रुंड मुंड से मुड़ाए चला ।। सबका ।।**

 **बी॰ यू॰टी॰ बट , पी॰यू॰टी॰ पुट , की चोट दिल पर खाए ,**

 **सुन मक्कारी भाषा की , खोट नज़र में आए ।। सबका ।।**

 **देशप्रेमियों, ओ-राष्ट्रप्रेमियों, देशप्रेमियों, ओ-राष्ट्रप्रेमियों ,**

 **गर्व से देश भाषा अपनाए चला ।। सबका ।।**

 **द्वार दरबार होवै , होवै जनता सरकार,**

 **बाबू-अधिकारी होवै , होवै ज्ञान व्यापार ,**

 **देशप्रेमियों ओ, ओ राष्ट्रप्रेमियों ,ओ देशप्रेमियों ,ओ राष्ट्रप्रेमियों**

 **सर्वत्र हिन्दी की बिन्दी सजाए चला ।। सबका ।।**

 उदयराज **सरोज**

 पीजीटी (हिन्दी)

 **15॰09॰1996**

 **2॰ आग लगे अँग्रेजी को**

**अंग लगी अंग्रेजी ,पर. हिंदी रमी जुबानी है ,**

**आग लगे अंग्रेजी को हिंदी हमारी बानी है ।।**

**भैया मेरा नन्हा –मुन्ना वह हिंदी में बोले ,**

**देव ज्ञान हमें दे दो , पहना दो बुद्धि के चोले ,**

**सुबह-शाम जब पूजा करता, कहता बम-बम भोले ,**

**उसका कहना बहना मेरी , लाई मुझको पानी है ।। आग......।।**

**मझला भाई मुझसे बोले दीदी क्या कहती हो ?**

**है अफसोस बड़ा ही कैसे अंग्रेजी के संग रहती हो ?**

**दिल से मेरी दूरी है, पर पढ़ने की मजबूरी है ,**

**यही समझ में न आता, क्यों डाला बोझा भारी है ?**

**अंग्रेजी है अंग्रेजों की , या जुबान हिंदुस्तानी है ।। आग......।।**

**मैं पली-बड़ी औ खड़ी हुई हिंदी के गहरे पानी में ,**

**न जाने कब छीन लिया ? कैसे अंग्रेजी ने नादानी में ,**

**के॰वि॰का हर कोना-कोना अंग्रेजी-हिंदी से सना हुआ ,**

**पर मै न जानूँ क्यों ग्यारहवीं से हिंदी पढ़ना मना हुआ?**

**मृगतृष्णा - सा हुआ छलावा , बल आया पेशानी है ।। आग.....।।**

**मैया मेरी सदन भवानी , हिन्दी जाकी बान है ,**

**हिन्दू-मुस्लिम,सिक्ख-ईसाई,उसकी क्या पहचान है?**

**सब को वह एक ही माने ,क्योंकि सब ही इंसान हैं,**

**करती त्याग तमाम , हर लेती , सब परेशानी है ।। आग.....।।**

**पापा मेरे हिन्दी शिक्षक, उनकी हिन्दी ,हिन्दी की ,**

**पग-पग रक्षक हिन्दी के, बिन्दी सजाए हिन्दी की ,**

**भोजन में मिर्च-मसाले ,औ स्वाद मिले जो पपड़ी का,**

**वाद्यों में सब वाद्य अधूरे, नाद मिले न खंझड़ी का,**

**ऐसे पोषक हिन्दी के, जिनकी उपज कहानी है ।। आग....।।**

 उदयराज **सरोज**

 पीजीटी (हिन्दी)

 **15॰09॰1996**

**3॰ हिन्दी की मिठास**

 **अँग्रेजी के सिल बट्टे पर,**

 **पिसे तहजीबी मसाले का,**

 **कितना ही सुपाच्य-स्वादिष्ट**

 **व्यंजन क्यों न हो ?**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।।**

 **नहीं मिलेगी तृप्ति ,**

 **अतृप्त ही रह जाएगा ।**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।।**

 **यदि भाषाई व्यंजन का स्वाद चाहिए ,**

 **तो भारतीय भाषाओ में,**

 **प्रेम की खाद मिलाइए ।**

 **भाषाई नफरत की खाईं पाटो ,**

 **हिन्दी की जड़ न काटो ।**

 **जिसमें कुछ मिलाने की जरूरत नहीं ,**

 **बस जिह्वा की टोन मिलाइए ।**

 **रसानन्द रसाल राष्ट्र बन जाएगा ।।**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।।**

 **जिस सभ्य समाज की भाषा,**

 **सिर ललाट पर छाए है ,**

 **तहजीबी अपनी त्याग ,**

 **तिलंगी गले लगाए हैं ।**

 **हम जाने सौभाग्यवती**

 **दुल्हन-जैसी अंग्रेजी भाषा है ।**

 **मेरी नहीं हुई तो क्या ?**

 **पर मेरे कल की आशा है ।**

 **पर तिल–तिल तल्ख लगे ,**

 **तिलंगी भाषा की तलवार ,**

 **अपनत्व संयम सहनशीलता**

 **और छीन लिया है प्यार ,**

 **दिल का सुकून, मन का चैन ,**

 **तू कहाँ से लाएगा ।।**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।।**

 **पर स्वाद कसैला आएगा ।।**

 उदयराज **सरोज**

 **17॰09॰1996**

 **4॰ हिन्दी महिमा**

 **मत पूछो, किस रंग में, रंगी है हिन्दी ।**

 **देखो उठाकर पलकें, माथे चमक रही है बिंदी ।।**

 **हिन्दी रंगी है, रंग कबीरा, जिसने दिया अक्खड़ वाणी का हीरा ।**

 **हिन्दी रंगी है रंगे मीरा, जिसकी रसना बलदाऊ के वीरा ,**

 **कर विषपान है नाची मीरा, नाच पिया, विष समझ के नीरा ।**

 **हिन्दी रंगी सूर के माथे, कह कृष्ण कभी न अघाते,**

 **बने प्रणेता वात्सल्यधार, सूर से धन्य सूर विचार,**

 **लिखे काव्य हिन्दी में, पद की सुंदर तुकबंदी ।। मत -।।**

 **प्रेम की दरिया में डूबे जायसी , गीत रुहानी गाए ,**

 **लिख नागमती की विरह कहानी, अंदाज़े फ़कीर कहलाए ,**

 **शीतल छाया तुलसी पाए, जिसकी छाया से जग पर छाए ,**

 **कृति महान है मानस जिनकी ,जिसकी भाषा है हिन्दी ।।मत -।।**

 **बने बिहारी दोहा पुजारी ,साजे हिन्दी की फुलवारी ,**

 **महिमा मंडित शब्दों की ,मेघों से जैसे झड़ी झारी ।।**

 **भाव पिरोये शब्द भुवन में, हमको हिन्दी लगती प्यारी**

 **भाए मन को, गले लगाए, प्यारी-प्यारी न्यारी हिन्दी ।। मत ।।**

 **गांघी सुभाष सुखदेव भगत तिलक गोखले मौलाना आज़ाद ,**

 **छोड़ छाड़ घर निकले उधम , जिनका था मस्ताना अंदाज़** ,

 **साज करो, शृंगार करो, हर मंच पर हिन्दी का सत्कार करो ,**

 **सफर सुहाना मृदु हिन्दी का , इसमें ही सब व्यापार करो ,**

 **अमर बेल है हिन्दी हमारी , हम हैं फरियादी हिन्दी के ।। मत -।।**

 उदयराज **सरोज**

 **20॰09॰1998**

**5. प्यास बुझाओगे ?**

 **पहले मानते थे हिन्दी दिवस ,**

 **जो समय मनाने का था बस ।**

 सब कुछ था सरस ,

 मनाना ही था बस ,

 **समय की विवशता ,**

 **सब थे विवश ।**

 मना कर देख लिए-

 हिन्दी का सप्ताह ।

 वाह-वाह की ताल बजी ,

 **दिल से निकली आह ।**

 **दिल से निकली आह ,**

 पूरी हुई न चाह ।

 आखिर हिन्दी ने पकड़ ली ,

 पखवाड़े की राह ।

 **वर्षों तक मनाए ,**

 **हम हिन्दी पखवाड़ा ,**

 **उसमें भी अनवरत**

 **व्याख्यान ही झाड़ा ।**

 **कभी हिन्दी की शान मेँ ,**

 **तो कभी अपनी जुबान मेँ,**

 **फंसी,अंग्रेज़ियत को लताड़ा ।**

 **वाह रे हिंदी पखवाड़ा ,**

 **तेरे मंच को बना दिया -**

 **तेरे राहगीरों ने भाषाई अखाड़ा ।।**

 **माँ भारती -कोटि- कोटि जन की हिन्दी ,**

 **आलोकित धूमिल क्यों हुई तेरी बिन्दी ?**

 पुनः राजभाषा पारित

 नवीन निर्देश आया है ।

 जो हिन्दी के लिए सही ,

 पर शुभ संदेश लाया है ।

 **दिवस , न सप्ताह , न मनेगा पखवाड़ा ।**

 **यहाँ तो है बस , महीने का वारा– न्यारा ।**

 **एक से तीस सितंबर तक , हिन्दी मास चलेगा ।**

 **समय तो नहीं ,पर श्री गणेश मनेगा ।**

 श्री गणेश से काम चला लो ।

 इसी से हिन्दी का नाम बढ़ा लो ।।

 **मै पूछता हूँ कि ---ऐसे कब तक**

 **हिन्दी पखवाड़ा और मास मनाओगे ?**

 **क्या इसी से हिन्दी की प्यास बुझाओगे ? 2?**

उदयराज **सरोज**

 **20॰09॰2002**

**6॰ भोर का पानी**

**तड़के का पानी आ गया ,**

**पाँच बजे का पानी आ गया ।**

**भोर का पानी आ गया ,**

**पीने का पानी आ गया । दौड़ो –दौड़ो, उठो–उठो,**

**जागो-जागो ।**

**सोना, सोना बंद करो,**

**अब पानी आ गया ।।**

**तड़के का पानी आ गया ।**

**पाँच बजे का पानी आ गया ।। भोर का ..।**

**तू जो उठे नहीं , जल्दी से ,**

**बाल्टी कौन लगाएगा ?**

**खाली पड़ा , खुला नल,**

**बहता है पानी ,**

**बहता ही जाएगा । अभी फोर्स है ज्यादा ,**

**फिर फोर्स कम हो जाएगा ।**

**पीने भर को भी पानी,**

**मुश्किल से भी नहीं मिल पाएगा ।**

**मै कहती उठ ,**

**अरी निगोड़ी उठ ,**

**जल्दी से तू उठ ,**

**पीने का पानी आ गया ।**

**तड़के का पानी आ गया ।। पाँच बजे ...।**

**पड़ी-पड़ी तू खाट पर ,**

**जिंदगी की बाट पर ,**

**तू जो नहीं उठ पाएगी ,**

**पानी कैसे भर पाएगी ?**

**रान्ह- पड़ोसी जाग गए ।**

**घड़ा लेकर भाग गए ,**

**नल पर भीड़ हो रही ,**

**तू जैसे-मरती सो रही ,**

**वह देखो , अरे उधर देखो ।**

**जरा; आँख खोलकर देखो ,**

**‘सरोज’ का भी घड़ा आ गया ।**

**तड़के का पानी आ गया ,**

**पाँच बजे का पानी आ गया ,**

**भोर का पानी आ गया ।**

**पीने का पानी आ गया ।**

उदयराज **सरोज**

 **पी॰आर॰टी॰(10-10-1991)**

 **के वि सांब्रा,बेलगाम**

**7॰ संदेश**

 **जय भारत स्काउट- गाइड ,**

 **तू दुनिया में अमर रहे ।**

 **जग–जन में गूँजे कर्म तुम्हारा ,**

 **खुशियों से आँगन भरा रहे ।। जय ।।**

 **मातृभूमि के पुण्य भाल पर ,**

 **कर्मों का ध्वज फहरा करे ।**

 **कर जाएँ सत्कर्म ऐसे ,**

 **धरा पर नाम अमर रहे ।।**

 **जय भारत स्काउट-गाइड ।।**

 **यश –गणना गणक करे,**

 **तो भी गणना कर न पाए ।**

 **पर उपकारी हों बलिदानी ,**

 **स्काउट की शान बढ़ाएँ ।**

 **पाएँ ध्रुव स्थान वहाँ ,**

 **जहां देवों का दरबार रहें ।।**

 **जय भारत स्काउट-गाइड ।।**

 **जीना –जीना है उसका ,**

 **जो स्काउट में जीता है ।**

 **पीना –पीना है उसका,**

 **जो स्वाभिमान का पानी पीता है ।**

 **उसका जीना –पीना है क्या ?**

 **जो स्काउट से रीता है ?**

 **लघु जीवन की लघुता मे ,**

 **कीर्ति – कमल अजर रहे ।।**

 **जय भारत स्काउट-गाइड ।।**

 **आना–जाना इस दुनिया का,**

 **केवल एक दिखावा है ।**

 **अपना और पराया मन का,**

 **सुंदर एक भुलावा है ।**

 **नादानों के बांटे मन बटे तो,**

 **क्या मानव ऐसे बँटता है ?**

 **लो बाँध सभी को मानवता में,**

 **बंधा हमारा प्यार रहे ।।**

 **जय भारत स्काउट–गाइड ,**

 **तू दुनिया में अमर रहे ।। 2 ।।**

 उदयराज **सरोज**

 **पी॰जी॰टी॰(हिन्दी)वास्को द गामा गोवा**

 **05॰12॰2002**

**8॰ प्रगति**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **कहाँ – कहाँ की है ?**

 **इसकी लंबी सूची है ।**

 **पर जहाँ – जहाँ भी की हैं,**

 **समितियाँ ही गठित की हैं ।।**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **पता नहीं है कि -**

 **हमने क्या – क्या प्रगति की है ?**

 **पता भी है, तो भूल जाना चाहता हूँ ,**

 **घोटालों का घूँट पी जाना चाहता हूँ ,**

 **क्योंकि हमने प्रगति की है ।।**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **यह हमारा दावा है ,**

 **पचास वर्षों का कारवां है ।**

 **कौन कहता है कि –**

 **हमने प्रगति नहीं की है ?**

 **सामने तो आए ,**

 **सोच – विचार कर बतलाए ,**

 **मिशाल देकर समझाए ,**

 **हम जवाब, लाजवाब देंगे ,**

 **सुनहरे भारत का, सुनहरा ख्वाब देंगे ,**

 **क्योंकि - हमारा काम ही यही है ,**

 **सामने वालों की समझ में न आए ,**

 **सदैव ऐसी बात ही कही है ।**

 **क्या यह हमारी प्रगति नहीं है ?**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **मना रहे हम आजादी की पचासवीं वर्षगाँठ,**

 **क्या पता इसमें भी हो कोई साठ-गाँठ?**

 **आज़ादी – आजादों का राग है ,**

 **बच्चे – बूढ़ों का भाग है ।**

 **मर मिट जाएँगे देश के खातिर ,**

 **यही बुनियादी स्वांग है ।**

 **इसे कुछ ने दलाली के भाव बेंचा ,**

 **जिसे शहीदों ने अपने खू से सींचा ।**

 **आज मानव – मानव में खींची रेखा ,**

 **इसी से वोट को भुनाते हैं ,**

 **चुनाव जीत कर वो आते हैं ,**

 **बुद्धिजीवियों के भी आदर्श बन जाते हैं ।**

 **क्या यह हमारी प्रगति नहीं है ?**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **जोड़-तोड़ की नीति अपनाओ ,**

 **दस-बारह मिलि, एक हो जाओ ,**

 **संग में बैठो, और बिठाओ ,**

 **जीवन – मूल्य दफन कर ,**

 **मानव – मुर्गे हज़म कर जाओ ।**

 **आज़ादी नाच रही होटलों में ,**

 **आज़ादी नाच रही बोतलों में ,**

 **आज़ादी नाच रही फाइलों में ,**

 **आज़ादी नाच रही चंद जाहिलों में ,**

 **आज़ादी खिसक रही पैमानों में ,**

 **आज़ादी सिसक रही अरमानों में ,**

 **क्या यह हमारी प्रगति नहीं है ?**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **नैतिकता की वेदी पर अनैतिकता का हवन करो ।**

 **सुरम्य शांति की बगिया में , मानवता को नमन करो ।**

 **झूठे अहम दिखाने वालों , मानव – भक्षण बंद करो ।**

 **सत्य –अहिंसा की पावन धरती , इस पर न फरफंद करो ।**

 **डायर की शैतानी ने जलियाँवाला, गदर किया ।**

 **आए दिन जलियाँवाली घटना घटती ,**

 **क्या यह हमारी प्रगति नहीं है ?**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

 **पानी बेंच पानी पीते,**

 **मिनरल पानी बोतल का,**

 **फीका भोजन घर का लगता,**

 **भोजन करते होटल का ।**

 **पानी विक्रय करने वालों,**

 **होश करो,**

 **मदहोश न होओ ।**

 **समय अभी है , देश बचाओ ।**

 **आजादी की कीमत जानो ,**

 **राष्ट्र और राष्ट्रीयता को पहचानो ,**

 **राष्ट्र बिखर रहा ,**

 **क्या यह हमारी प्रगति नहीं है ?**

 **हमने प्रगति की है ।। हमने प्रगति की है ।।**

उदयराज **सरोज**

 **पी॰जी॰टी॰(हिन्दी)**

 **06॰12॰1997**

**9॰ आज़ादी की झलक**

**आजादी मिली हमको , कागज़ का पुलिन्दा बनकर ,**

**बंद हो गई चन्द मुट्ठियों में, जमींदारी करिन्दा बनकर ,**

आती हंसी हमें आज़ादी की, पचासवीं वर्ष-गाँठ पर ,

देश जा रहा रसातल को, स्वार्थियों की सांठ-गाँठ पर ,

प्रतिमा प्रतिमा लड़ती-मरती, क्या अनोखा टक्कर है ।

है कहना अफ़सोस यहाँ, केवल कुर्सी-कुर्सी का चक्कर है ।

**आज़ादी बन कठपुतली रह गई ,**

**जयचंदों का खेल चुनिन्दा बनकर ।। आज़ादी ।।**

नए-नए नियम कानून ,जनता को भरमाते हैं ,

धीरज धरम धोखा दे ,मैदान मार कर आते हैं ,

खाते रसगुल्ले और मलाई ,टुकड़ा रोटी का फेकवाते हैं ।

आवाज़ उठी बुभिक्षितों की ,तो,फौरन गोली चलवाते हैं ।

उनसे कहते सावधान , देश की बिगड़ी हालत है ।

लेना कर्ज विदेशों से , इसमें मिली महारत है ।

**कर्जी बाप का कर्जी बेटा ,जन्म लिया घर कर्जी बंदा बनकर ।। आजादी ।।**

 उदयराज **सरोज**

 **13॰12॰1997**

**10॰ बालक**

**वास्को स्टेशन के दो बच्चे,**

**उम्र के कच्चे ।।**

हम उम्र दर्शाए ,

दर्शक के मन को भाए ,

जुबा रसीली , बाल हठीली ,

तन लिबास मटमैली ,

काली- नीली, पीली–पीली ।

राग अलापे मीठे-मीठे ,

स्वप्न सजाए मीठे –मीठे ,

**भाव बताए दर्पण मन के सच्चे ।। स्टेशन --।।**

रेलवे स्टेशन का आरक्षण कक्ष ,

क्रीड़ा में वे दोनों दक्ष ,

छोटा-बड़ा न कोई लक्ष ,

पक्ष दिखाए विषमता का ,

मानव की गिरती मानवता का ।

वेदना वेधती बाल अभाव ,

जीवन की अभाव ग्रस्तता का ।

पूछे कोई मानव समदर्शी से ,

हमें बताओ !

छीन लिया किसने कब और कैसे ?

**इनकी हरी-भरी बचपन बगिया के हर्षित गुच्छे ।। स्टेशन --।।**

हाथ प्रस्तर का एक-एक टुकड़ा ,

दोनों अपने-अपने हस्त में पकड़ा ,

एक दैहिक रूप से तगड़ा ,

दूजा एक पाँव से लगड़ा ,

लगड़ा चलता था लिए सहारा वैसाखी का ,

दूजा लगता था सच्चा पंडा काशी का ,

**हाय ! बालपन बन गया कैसे दुख के लच्छे ? स्टेशन --।।**

उदयराज **सरोज**

 **08॰03॰1997**

**11. जीवन**

हरी सुनहरी घास पर

जीवन के आस पर

**आशय का मोती चमके ।।**

जीवन वहीं जो जीवन सजाए

सजा के जीवन खुशियाँ पाए ,

**जीवन दामिनी – सा चमके ।।**

सावन के सन–सन में ,

झिंगुर की झन–झन में ,

घनी अंधेरी रातों में

**लाज की पायल खनके ।।**

उठता पर्दा प्रेम का,

जीवन के सूखे बागों से ।

अभिसिंचन होता कभी-कभी

वाणी के रूखे रागों से ,

**श्रम जीवन से जीवन-सुमन महके ।।**

मन के हिसाब पर

जन के विकास पर

समाज की धार पर

राष्ट्र के बहाव पर

स्वयं सृजन का भवन

विश्व उन्नयन का सदन

**उदय-भास्कर-सा चमके ।।**

 उदयराज **सरोज**

 **पी॰जी॰टी॰ (हिन्दी)**

 **08॰09॰2001**

**12. प्री–बोर्ड के बाद**

**अंकों पर मत जाना बच्चों , कर्मों पर जाना है । जो अंक मिले हैं; तुम्हें अभी , इससे नहीं घबराना है ।।**

**अंकों पर मत जाना बच्चों , कर्मों पर जाना है ।।**

**जो अंक मिले हैं; तुम्हें अभी , इससे नहीं घबराना है ।।**

**जो लक्ष्य बनाए हैं अंकों के , उससे भटक न जाना ,**

**संतुष्ट तभी होना , जब साध्य भरे अंकों को पाना ,**

**है सुझाव हमारा तुमको , तुम्हें सपनों के अंकों को लाना है ।। अंकों पर .....**

**जब जहां मिले कठिनाई , मिलकर उसे सुलझाना ,**

**शत प्रतिशत का हो लक्ष्य तुम्हारा , इससे शिथिल न होना ,**

**जटिल जटिलतम प्रश्नों को भी , हल करने पर ज़ोर लगाना ,**

**हो भविष्य प्रणेता भारत के , तुमको मनोबल नहीं गिराना है ।। अंकों पर .....**

**हँसते- हँसते स्वीकार करो , श्रम को अंगीकार करो ,**

**संघर्षों का है समय तुम्हारा , इससे न इंकार करो ,**

**साधक बनकर करो तपस्या , पावन परीक्षा पार करो ,**

**मंजिल है दूर तुम्हारी , अभी दूर बहुत जाना है ।। अंकों पर .....**

**परिश्रम ही सफलता की कुंजी , मंत्र ये भूल न जाना ,**

**जो संसाधन मिले सफर में , उनका लाभ उठाना ,**

**सूझ- बूझ का पौध लगाना , अहंकार को दूर भगाना ,**

**लक्ष्य से पहले मत थकना ,वरना जीवन भर पछताना है ।। अंकों पर .....**

**डांट – डपट कर क्या बतलाऊँ , समझदार को क्या समझाऊँ ,**

**मिला सुनहरा अवसर तुमको , ये चुनौती स्वीकार करो ,**

**शेष बचा समय है जितना , इस पर तुम उपकार करो ,**

**हंसी- हंगामें ,सैर- सपाटे , साथी –संगी, दिल की बातें,**

**इनकी महफ़िल फिर सजेगी , कहकहों की ढ़ोल बजेगी ,**

**पर अभी तो परीक्षा वाली , धुन ही बजाना है ।। अंकों पर .......**

**कंप्यूटर ,ट्यूटर और फेसबुक, टी॰वि॰,सीरियल धारावाहिक,**

**नहीं ये जीवन के ध्वजवाहक, नहीं शाश्वत सार्वभौमिक ,**

**इनके अवसर फिर मिलेंगे , अरमानों के फूल खिलेंगे ,**

**पर मिला समय जो पढ़ने का , इसे नहीं गंवाना है ।। अंको-**

उदयराज **सरोज**

 **पी॰जी॰टी॰ (हिन्दी)**

 **10-02-2014**

**13. प्रतिमान**

**पौरुष है महापुरुषों का , भारत के संस्कारों का ।**

**भूल न जाना इसकी महिमा , मातृभूमि –उपकारों का ।। पौरुष है ।।**

जब जननी की रही जरूरत , खूब तुम्हें है प्यार किया ,

जैसे –जैसे जग ने चाहा , हृदय - खोल भंडार दिया ,

मानुष तन के रहते ही , जीवन तेरा तार दिया ,

गंगा के पावन जल-सा ही , उसने तेरा उद्धार किया ,

**बैठाया धाम बैकुंठपुरी में , जहाँ राज सितारों का ।। पौरुष है ।।**

स्वर्णमयी स्वर्गासन है , त्रैलोकपुरी का शासन है ,

भरे भुवन का भ्रमण करे , पर मिले न ऐसा आँगन है ,

कल-कल नदियां, झर-झर झरने, स्वर कितना मनभावन है ।

दृश्यपान से मुखरित हो उठता , अमृतमय- मन पावन हैं ।

**मूक भाव - उद्गार उठा , निरख हृदय-तल लहरों का ।। पौरुष है ।।**

अंगारों पर चलना सीखो , फ़ौलादों से लड़ना सीखो ,

सुमनों-सा सुरभित कर दो , पुष्पों -सा हँसना सीखो ,

लदे फलों की झुकी डाल –सा , औरों के हित झुकना सीखो,

संकट की घड़ियाँ मातृभूमि पर , तो कुर्बानी करना सीखो ,

**संकल्प तुम्हारा प्रणय-प्राण का , सौगात तुम्हारी नजरों का ।। पौरुष है ।।**

माथे चन्दन मिट्टी का , बचपन सबका फूले फले ,

सुख-सदनो में नृत्य करें , जीवन खुशियों से हँसे पले ,

गंगा के पावन जल-सा , कोमल मन का फूल खिले,

भ्रातृभाव के संरक्षण में , लोक कल्याण की धूल मिले,

जन सैलाबों के उत्कर्षों में , आत्मोत्सर्ग का मूल मिले ,

**मंथन, चिंतन और समर्पण , उद्गम उच्च विचारों का ।। पौरुष है ।।**

उदयराज **सरोज**

पीजीटी(हिन्दी)

 **16/01/2016**

**मातृभूमि को सभी समर्पित ,संचित यश आदर्श आधारों का ।। पौरुष है ।।**

**14॰ मुश्किल की पहचान**

**हर मुश्किल हो जाए आसान ,**

**अगर कर ले मुश्किल की पहचान ,**

भटक रहे तुम मारे – मारे ,

सोय गंवाय समय दिये सारे ,

**कैसे होगा तेरा कल्यान ? ।। अगर कर ले मुश्किल की पहचान ।।**

स्वर में तेरे , हो हुंकार ,

मत ढीला कर , मन - व्यापार ,

**भाग्य वरण अपना कर, तू दुनिया के मेहमान ।। अगर ।।**

चल बढ़ा ,पहला कदम , मंजिल पास चली आएगी ।

आना ही, उसका स्वभाव ,दूर कहाँ, तुझसे जा पाएगी ।

देख परिश्रम ,कड़े तुम्हारे ,मुश्किल के बंधन ढीले हो सारे ,

**हो सपना ,पूरा अपना , अपनी लगा दे जान ।। अगर ।।**

मुश्किल को अपनाना है , इसे छोड़ भाग नहीं जाना है ।

मानव तन लेकर जग में आए, इसको पीठ नहीं दिखलाना है ।

मुश्किल में विश्राम विराम नहीं ,मुश्किल को ही पिघलाना है ।

**ये सौभाग्य तुम्हारा , है इसमें तेरा भगवान ।। अगर ।।**

फूलों का हार मिलेगा , सपनों का संसार मिलेगा ,

प्रीति कलह का व्यवहार मिलेगा , अपने-पराये का भाव मिलेगा ,

**मुश्किल पर विजय –पताका फहरे , तब तेरा हो सम्मान ।। अगर ।।**

 उदयराज **सरोज**

 **14.03.2016**

**15॰ मुश्किल को पिघलाना है ।**

**यदि जीवन-पथ की मंजिल को पाना है ।**

**तो स्व संघर्षों से मुश्किल को पिघलाना है ।**

संघर्षों की समरभूमि में मुश्किल को पहचानो ।

अपने कर्मों की वक्षस्थली से फौलादी न मानो ।

**फर्ज़ों की बलिवेदी पर रहना अटल, शीश नहीं झुकाना है ।। मुश्किल ---।।**

मानवता की हो क्षति, तो आत्मोत्सर्ग हो जाना ।

पौरुष का नव स्तंभ बन , दुनिया को दिखलाना ।

**सत्य -अहिंसा के रण में , विजय - ध्वज फहराना है ।। मुश्किल ---।।**

पावन पुण्य विश्व हमारा , मुश्किल का व्यवहार नहीं ,

हैं सब अपनी दुनियावाले , कहीं कोई तकरार नहीं ,

सौहार्द्र हो सब में अपनेपन का, यह नफरत का संसार नहीं ,

**नेत्रों में हो प्रकटीकरण करुणा का, हृदय विशाल बनाना है ।। मुश्किल ---।।**

उदयराज **सरोज**

 **15.03.2016**